दलाई लामा

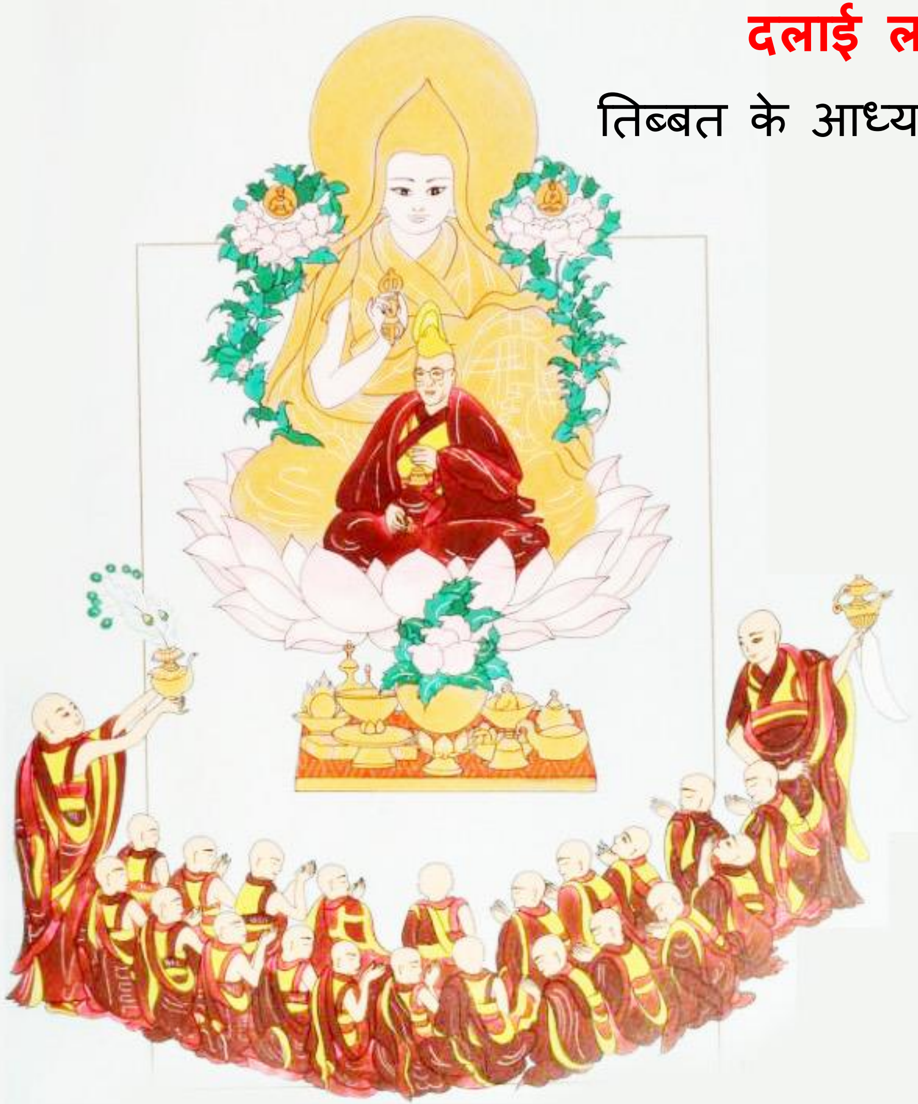
तिब्बत के आध्यात्मिक नेता



डेमी

दलाई लामा

तिब्बत के आध्यात्मिक नेता



परम पावन दलाई लामा को

"हज़ारों बेकार शब्दों से अच्छा एक वो शब्द है जो शांति दे."

- धम्मपद, बुद्ध के शब्द



दलाई लामा

मेरा जन्म साठ साल से भी पहले तिब्बत में हुआ था, एक सुंदर, खुला देश जो भारत के उत्तर में पहाड़ों में और चीन के पश्चिम में स्थित है. इस किताब में डेमी ने मेरे जीवन की कहानी सुनाई है. मैं उनके प्रयास की सराहना करता हूं क्योंकि मेरी कहानी आपको तिब्बती लोगों और उनके जीवन के अनोखे तरीके के बारे में भी कुछ ज़रूर बताएगी.

दलाई लामा के रूप में, मुझे तिब्बत और उसके लोगों के लिए विशेष चिंता है. उन्होंने मुझ पर भरोसा और उम्मीद जताई है, इसलिए मेरी जिम्मेदारी उनके लिए आवाज उठाना है. इसलिए, जब भी मुझ से बनता है, मैं लोगों को तिब्बत के अंदर की वास्तविक स्थिति बताने की कोशिश करता हूं.

जब मैं बड़ा हो रहा था, तो तिब्बती अपनी इच्छानुसार जीने के लिए स्वतंत्र थे. कई किसान थे और कुछ याक एवं भेड़ के बड़े झुंडों की देखभाल करते थे. कुछ व्यापारी थे जो व्यापार करने के लिए इधर-उधर घूमते थे, और कई मेरी तरह भिक्षु या भिक्षुणी बने थे. उन्होंने बड़ी धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया, प्रार्थनाओं को कंठस्थ किया और ध्यान में अपने मन को प्रशिक्षित करना सीखा. बर्फ के पहाड़ों से घिरे हमारे देश में शुद्ध जल, साफ हवा और नीले आसमान के साथ समृद्ध घास के मैदान और घने जंगल थे. यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी भय से मुक्त थे, क्योंकि तिब्बत में शिकार की अनुमति नहीं थी.

1959 से, तिब्बत पर चीन का कब्जा है और कई चीजें जिन्हें हम कभी प्यार करते थे वे खो गई हैं. 1959 से मैं लगभग 100,000 तिब्बतियों के साथ भारत में निर्वासन में रह रहा हूँ. यहां हमें नए घरों, स्कूलों और मठों के निर्माण और हमारे पारंपरिक रीति-रिवाजों और मूल्यों को बनाए रखने में मदद मिली है. भले ही हम शरणार्थी हैं, हमारा जीवन उन साठ लाख तिब्बतियों की तुलना में काफी आरामदायक है, जिनका तिब्बत में जीवन दयनीय बन गया है. मैं जिस सपने को पूरा करने के लिए काम कर रहा हूं, वो यह है कि जल्द ही वो दिन आए जब वहां आजादी, शांति और खुशी स्थापित हो, जो तिब्बत में कभी हुआ करती थी



परिचय

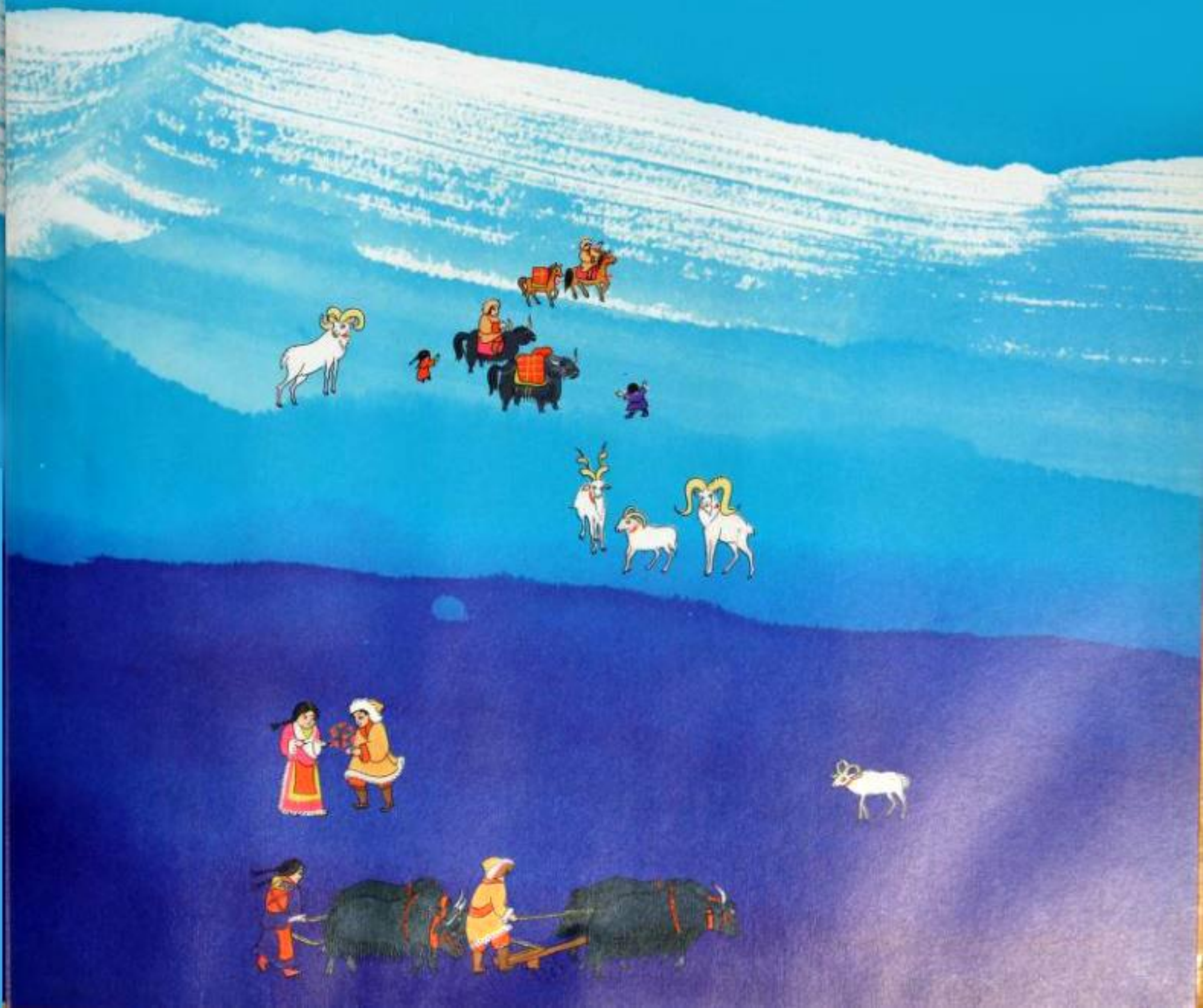
तिब्बत की भूमि पहाड़ी और भव्य है. इसकी ऊँचाई इतनी अधिक है कि इसे "दुनिया की छत" के रूप में जाना जाता है. और उसकी राजधानी शहर, ल्हासा, अक्सर स्वर्गीय इंद्रधनुषों से जगमगाती है.

तिब्बत दुनिया के सबसे अधिक धार्मिक देशों में से एक है. तिब्बती लोग बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करते हैं, जो ईसा से पांच सौ साल पहले पैदा हुए एक संत थे. प्रत्येक तिब्बती गाँव, चाहे वो कितना भी छोटा क्यों न हो, उसका अपना बौद्ध मंदिर होता है, जो तिब्बती सामाजिक धार्मिक जीवन का केंद्र होता है.

बौद्ध पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं - यह विचार कि लोग इस धरती पर कई बार पुनर्जन्म लेते हैं. उनका यह भी मानना है कि पूर्णता की स्थिति, जिसे निर्वाण कहा जाता है, केवल तभी प्राप्त होती है जब व्यक्ति कई सबक सीखे और उसने कई जीवन जिए हों.

1500 के दशक से, तिब्बत में बौद्ध नेता दलाई लामा रहे हैं, जिन्हें करुणा के बौद्ध संत चेनरेज़िग के शारीरिक रूप में, लोगों द्वारा पूजा जाता है. प्रत्येक नए दलाई लामा को पिछले सभी दलाई लामा का पुनर्जन्म माना जाता है.

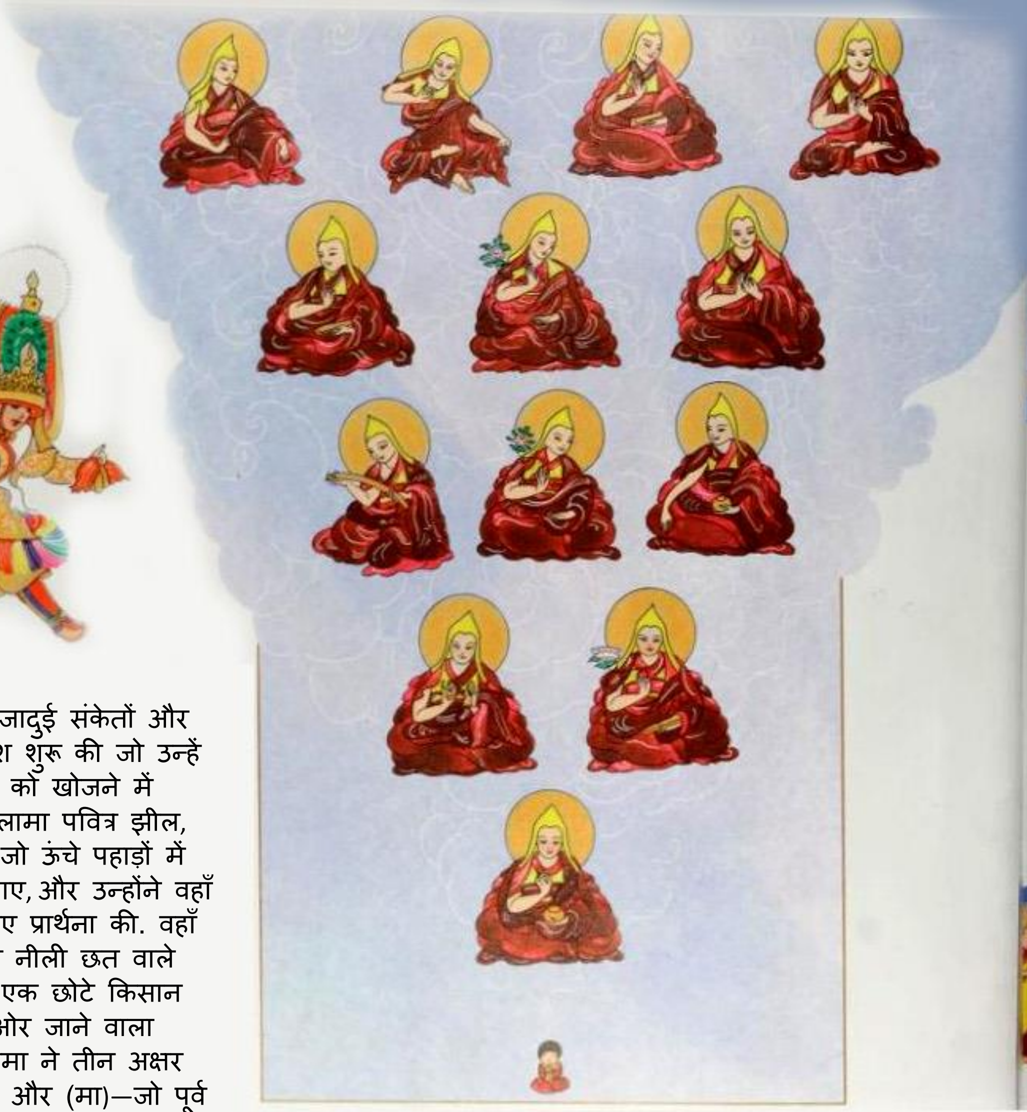
तिब्बती भाषा में दलाई का अर्थ होता है "समुद्र" और लामा का अर्थ "शिक्षक." इसलिए, दलाई लामा का अर्थ होता है "ज्ञान का सागर".



1933 में जब तेरहवें दलाई लामा की मृत्यु हुई, तो अन्य लामाओं ने उनका स्थान लेने वाले व्यक्ति की तलाश शुरू की. उनका मानना था कि उनकी आत्मा का दूसरे बच्चे में पुनर्जन्म हुआ होगा. उनका काम उस बच्चे को ढूंढना फिर उसे और उसके परिवार को ल्हासा के मंदिर में वापस लाना था.







लामाओं ने जादुई संकेतों और शकुनों की तलाश शुरू की जो उन्हें नए दलाई लामा को खोजने में मदद करें. एक लामा पवित्र झील, ल्हमोई ल्हात्सो जो ऊंचे पहाड़ों में स्थित थी वहां गए, और उन्होंने वहाँ मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की. वहाँ झील में भिक्षु ने नीली छत वाले एक मंदिर और एक छोटे किसान की झोपड़ी की ओर जाने वाला रास्ता दिखा. लामा ने तीन अक्षर देखे, (आह) (का) और (मा)—जो पूर्व स्थित जगह के नामों की पहली ध्वनि थे. इससे वो समझ गया कि उसे पूर्व दिशा में खोजना चाहिए.





इस बीच, पूर्वी तिब्बत के एक छोटे से गांव टैक्स्टर में, एक युवा लड़का अपने परिवार के कामों में मदद करना सीख रहा था. उसका घर बहुत साधारण था लेकिन उसके प्यारे माता-पिता, एक बड़ी बहन और तीन बड़े भाई थे. लड़के को माँ के साथ दही बिलोना और बहन के साथ कपड़ा बुनना अच्छा लगता था. उसके भाइयों ने उसे भेड़-बकरियों का ऊन कतरने और पशुओं को चराना सिखाया. उस छोटे लड़के को सबसे ज़्यादा अपने पिता के साथ मैदानों में सवारी करना पसन्द था.

एक साल बीत गया और भिक्षुओं को अभी भी अपना नया आध्यात्मिक नेता नहीं मिला था. जैसे ही वे टैक्स्टर के करीब आए, एक सुंदर इंद्रधनुष उन्हें एक छोटे से किसान की झोपड़ी और एक नीली छत वाले मंदिर की ओर जाने वाले मार्ग तक ले गया. वो झोपड़ी उस छोटे लड़के का घर थी. उसका नाम ल्हामो धोंडुब था.

भिक्षुओं ने सुना था कि ल्हामो एक बहुत ही विशेष बच्चा था, लेकिन उन्हें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ था कि वो वही लड़का है जिसकी वे तलाश कर रहे थे.

लोगों ने कहा कि जब ल्हामो का जन्म हुआ था, तब उसके बीमार पिता एकदम ठीक हो गए और खेतों की खराब फसल एकदम भरपूर हो गई थी. उन्होंने कहा कि जैसे ही वो बोल सका, उसने सबको बताया कि वो दलाई लामा था और उसका असली घर ल्हासा में था. और उसने जब उस खोजी दल को देखा, तब उसने अपना सब कुछ समेटा, और कहा, “अब मैं अपने घर जा रहा हूं.”



भिक्षुओं को यह सुनिश्चित करना था कि वो वही बच्चा था जिसकी वे तलाश कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उसका परीक्षण करना शुरू किया. उनका मानना था कि यदि ल्हामो वास्तव में दलाई लामा होगा, तो उसे अपने पिछले जीवन की बातें याद होंगी. इसलिए, उन्होंने उसे विभिन्न वस्तुएँ दिखाईं - वे चीज़ें जो तेरहवें दलाई लामा की थीं. तुरंत दो साल के बच्चे ने सभी सही चीजें चुनकर निकालीं और घोषणा की,
"यह रही मेरी पुरानी छड़ी! यह है मेरा ढोल! यह है मेरी प्रार्थना की मालाएं!"





तब खोज दल को कोई संदेह नहीं था कि उन्हें असली चौदहवें दलाई लामा मिल गया था.



और फिर उस दो साल के बच्चे को और उसके बेहद खुश और गर्वित परिवार को ल्हासा ले जाया गया.
रास्ते में हजारों तिब्बतियों ने उसे नमन किया और अपने नए शिशु देव-राजा के सामने प्रार्थना की.

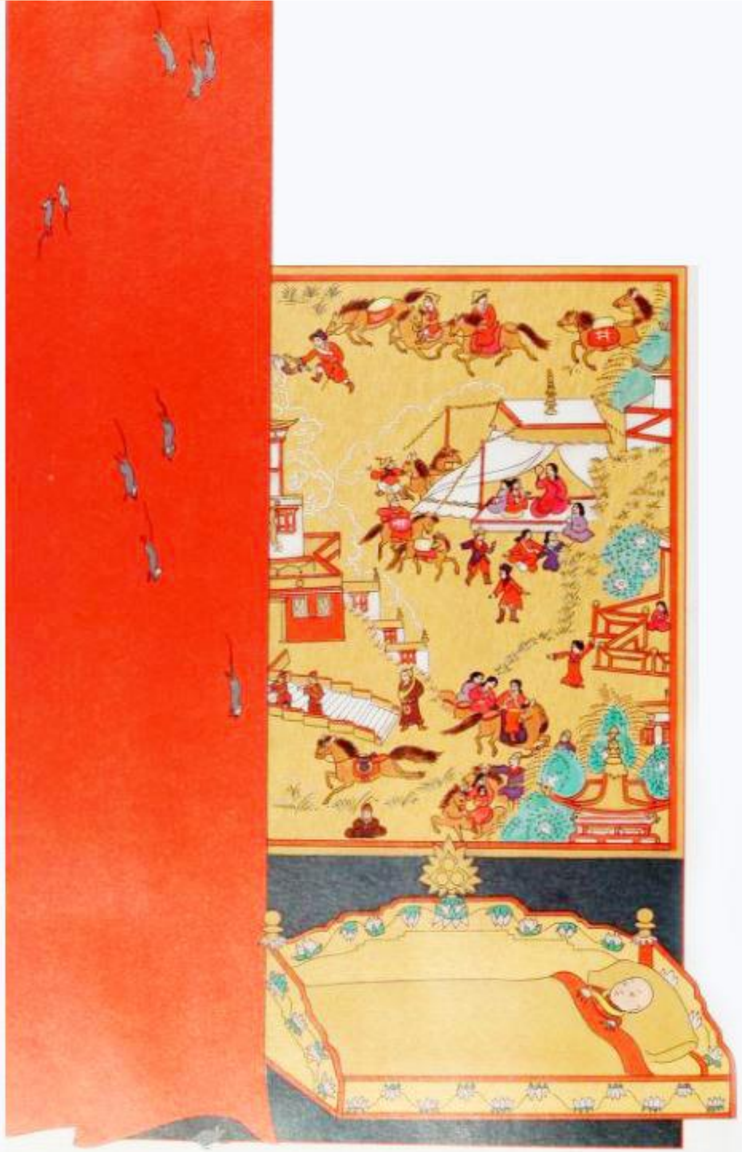
22 फरवरी, 1939 को एक भव्य समारोह में, जब ल्हामो चार वर्ष के थे, वे चौदहवें दलाई लामा बन गए और उन्हें एक नाम दिया गया, जिसका अर्थ था "पवित्र, कोमल, शक्तिशाली वक्ता, दिव्य ज्ञानी और मन में शुद्ध विश्वास का धारक, और महासागर-व्यापी" लेकिन जब तक वो पंद्रह वर्ष के नहीं होते तब तक उसके स्थान पर एक रीजेंट (मंत्री) को देश पर शासन करना था.



पांच साल की उम्र में, दलाई लामा ने विशाल पोटाला पैलेस में विद्वान लामाओं के साथ अपना प्रशिक्षण शुरू किया. उनके दो शिक्षक थे. उन्होंने दलाई लामा को गणित, विज्ञान, इतिहास और भाषाएँ सिखाईं. उन्होंने उन्हें बौद्ध पवित्र पुस्तकें भी सिखाईं. इन पुस्तकों से, जिन्हें सूत्र कहा जाता था से नन्हे दलाई लामा ने ज्ञान, दया और करुणा के बारे में सीखा.



उनका एकमात्र मित्र उनके बड़े भाई और कई चूहे थे. रात में अपने विशाल, ठंडे बेडरूम में, छोटे दलाई लामा, चूहों को पर्दे के ऊपर और नीचे दौड़ते हुए देख सकते थे.





दलाई लामा होशियार, जिज्ञासु, शरारती और अपने शिक्षकों के लिए एक "पवित्र आतंक" थे. वो यांत्रिक चीजों पर मोहित थे. उन्होंने महल की सभी घड़ियों के अंजार-पंजर अलग-अलग किए, और उन्हें फिर से एक-साथ जोड़ा. लामाओं को दलाई लामा को सजा देने की इज़ाज़त नहीं थी, इसलिए लामा उनकी बजाय दलाई लामा के भाई को दंड देते थे. पर क्योंकि दलाई लामा अपने भाइयों को बहुत प्यार करते थे, इसलिए वो कोशिश करते थे कि वो ज्यादा शैतानी न करें.

सात साल की उम्र में दलाई लामा ने टेलिस्कोप की खोज की. उन्होंने टेलिस्कोप से ल्हासा के सभी बच्चों को गलियों में खेलते हुए देखा. उन्होंने एक पुराना सिनेमा प्रोजेक्टर भी खोजा और उसे चालू करवाया.

जब दलाई लामा कुछ बड़े हुए तो उन्होंने 1927 में बनी ऑस्टिन-हीली कार की मरम्मत की. वो महल के चारों ओर गाड़ी चलाने लगे और उन्होंने एक बार कार को आंगन में एक पेड़ से टक्कर मार दी. बाद में, उन्होंने कांच के नए टुकड़ों को काटकर और उन्हें पहले की तरह पुराना दिखने के लिए सिरप का लेप करके कार की टूटी हुई हेड-लाइट्स को ठीक किया.







तेरह वर्ष की आयु में, दलाई लामा ने दर्शनशास्त्र, सुलेख और तत्व-मीमांसा जैसे गंभीर विषयों का अध्ययन करना शुरू किया. उन्होंने बौद्ध पुस्तकों को कंठस्थ कर लिया और उन बहसों में शामिल हो गए जहाँ लामाओं ने वास्तव में बौद्ध धर्म के बारीक बिंदुओं पर चर्चा की. वो जल्द ही एक विशेषज्ञ बन गए. 1950 में, जब वे पंद्रह वर्ष के थे, तब दलाई लामा को तिब्बत का आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता बनाया किया गया. लेकिन जब दलाई लामा ने महल की शांति में पढ़ाई कर रहे थे तब बाहर घमासान युद्ध चल रहा था.

1950 में, कम्युनिस्ट चीन ने तिब्बत पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया, जिससे तिब्बती लोगों को बहुत कठिनाई हुई. बौद्ध धर्म का दमन किया गया. ग्रामीण इलाके तबाह हो गए और अर्थव्यवस्था का दिवालिया पिट गया. उससे तिब्बत में अराजकता फ़ैल गई.

1954 में, उन्नीस वर्ष की आयु में, दलाई लामा कम्युनिस्ट नेता चेयरमैन माओ त्से-तुंग के साथ शांति बनाने के लिए चीन की राजधानी बीजिंग गए, लेकिन उससे शांति बन नहीं पाई.

साम्यवादी सांस्कृतिक क्रांति पूरे चीनी महाद्वीप में फैल गई, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर विनाश और मानव पीड़ा हुई. अनगिनत संख्या में राष्ट्रीय खजाने, पवित्र पुस्तकें और मंदिर जलाए गए और बर्बाद किए गए. इस पागलपन से तिब्बत भी बचा नहीं रहा.

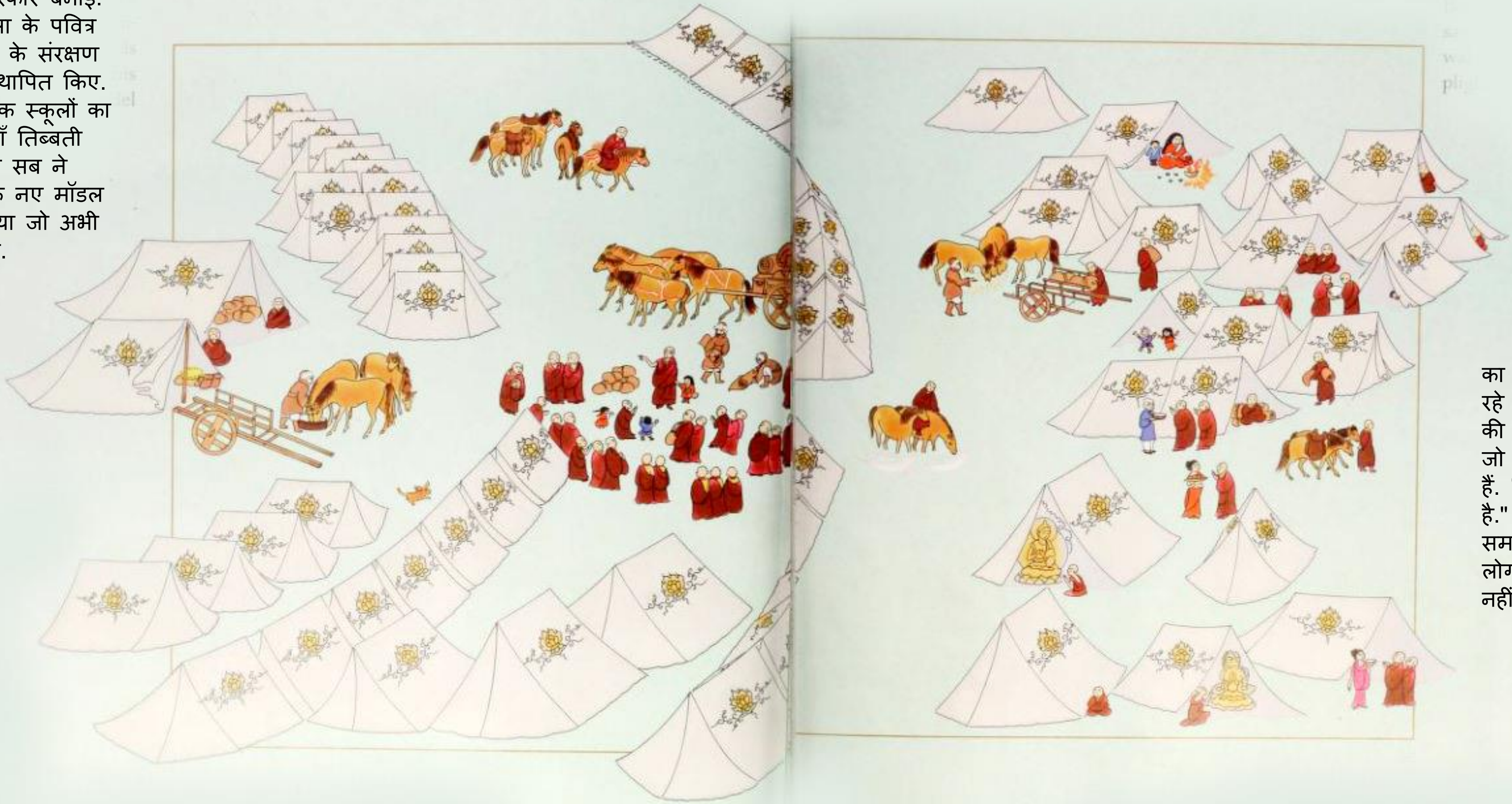


1959 में, कम्युनिस्ट चीनी सेना ने तिब्बत पर आक्रमण किया. सैकड़ों बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया गया और हजारों भिक्षुओं को गिरफ्तार कर लिया गया या मार दिया गया. 17 मार्च की रात को, दलाई लामा और एक छोटे से दल ने तिब्बत से भारत के लिए दो सप्ताह का दुःखद पलायन शुरू किया. एक साधारण व्यक्ति के वेश में दलाई लामा, कम्युनिस्ट सेना के सैनिकों को चकमा देने में सफल रहे.



लेकिन कई दिनों तक नींद न आने, खराब भोजन और सबसे ऊंचे पर्वत हिमालय की विरल हवा से गुजरने के बाद दलाई लामा बीमार पड़ गए. भारत में शेष यात्रा के लिए उन्हें एक याक की पीठ पर बांधना पड़ा. आखिरकार 31 मार्च को दलाई लामा जंगल से बाहर निकले. वो चौबीस वर्ष का थे और निर्वासन में उनका जीवन शुरू हो गया था.

हजारों तिब्बती जल्द ही अपने आध्यात्मिक नेता के साथ भारत आए. धर्मशाला में उन्होंने अपनी निर्वासित सरकार बनाई. उन्होंने तिब्बती कला के पवित्र ग्रंथों और चिकित्सा के संरक्षण के लिए नए केंद्र स्थापित किए. उन्होंने मुफ्त पब्लिक स्कूलों का आयोजन किया जहाँ तिब्बती बोली जाती थी. इस सब ने तिब्बत के लिए एक नए मॉडल को पुनर्स्थापित किया जो अभी भी कार्य कर रहा है.



दलाई लामा एक साधु का आध्यात्मिक जीवन जीते रहे हैं. वो उन तमाम लोगों की दुखद कहानियाँ सुनते हैं जो तिब्बत से भागकर आए हैं. "मेरा सच्चा धर्म, दयालुता है." वे कहते हैं, "कोई ऐसा समय नहीं है जब मैं अपने लोगों की दुर्दशा के बारे में नहीं सोचता हूँ."





आज दलाई लामा पूरी दुनिया की यात्रा करते हैं, और ऐसे भाषण देते हैं जो तिब्बत की दुर्दशा पर अंतर्राष्ट्रीय ध्यान खींचें. वो शांति और करुणा की बात करते हैं. वे अपने श्रोताओं को याद दिलाते हैं कि बुद्ध के नाम पर कभी भी कोई युद्ध नहीं लड़ा गया, और युद्ध, लड़ाई से नहीं, बल्कि शांति और प्रेम से रुकता है.

1989 में दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार मिला. समारोह में उन्होंने कहा, "चूंकि हम सभी इस छोटे ग्रह पृथ्वी को साझा करते हैं, इसलिए हमें एक-दूसरे के साथ और प्रकृति के साथ सद्भाव और शांति से रहना सीखना होगा.

"सरलता से जियो और मानवता से प्रेम करो. जब तक अंतरिक्ष है और जब तक जीवित प्राणी हैं, तब तक मैं भी, दुनिया के दुखों को दूर करने के लिए अपना छोटा-मोटा काम करता रहूँगा."

शांति के लिए दलाई लामा का काम आज भी जारी है.